सिक्किम की लोक संस्कृति पर कंचनजंघा का प्रभाव

छुकी लेप्चा
संपर्क- 9434191930

भारत में सिक्किम का विलय 22वें राज्य के रूप में 16 मई, 1975 को हुआ था। विश्व की तीसरी सबसे ऊँची पर्वतमाला जिसकी ऊँचाई 4,586 मी. है, यह भारत का दूसरा छोटा राज्य सिक्किम कंचनजंघा की तराई में बसा है। प्राकृतिक सौन्दर्य, प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर इस राज्य में जैविक विविधता भी देखने को मिलती है। राज्य का राजकीय पशु- 'रेड पांडा' (Red Panda) है। राजकीय पक्षी- ब्लड फिजेंट (Blood Pheasant), राजकीय वृक्ष रोडोडेंड्रन (Rhododendron) (खेमू, गुरास) एवं राजकीय फूल नोबल आर्किड (Noble Orchid) है, जिसकी 400 के करीब प्रजातियाँ हैं। यह जानकार आपको आश्चर्य होगा कि यहाँ तितलियों की 600 के करीब प्रजातियाँ पाई जाती हैं।

हिंदी साहित्य के भक्तिकाल को स्वर्ण युग कहा जाता है, क्योंकि उस समय ऐसे महान संतो का जन्म हुआ जिन्होंने भक्ति का मार्ग दिखाकर निराशा में डूबे जनमानस को नई चेतना प्रदान की थी। उसी में से एक हैं निर्गुण काव्य धारा के कवि-विचारक संत कबीर। उन्होंने कहा था- "कस्तूरी कुंडली बसे, मृग ढूँढ़े वन माहि।/ ऐसे घटि-घटि राम हैं, दुनिया देखे नाहि।।" जिसका अर्थ है - जिस तरह कस्तूरी मृग अपने ही नाभि में छिपे हुए सुगंधित 'कस्तूरी' पदार्थ को नहीं पहचान पाता और उसकी सुगंध से प्रभावित और मतवाला बनकर वन-वन उसे ढूँढ़ता-भटकता है, ठीक मनुष्यों की भी स्थिति यही है, वह अपने अंदर छिपे 'राम' को बाहरी चीजों, जगहों में ढूँढ़ता फिरता है। उसका 'राम' तो उसी के अंदर अच्छाई के रूप में छिपा है। यहाँ कस्तूरी मृग का ज़िक्र इसलिए किया, क्योंकि इस प्रजाति का मृग सिक्किम के वनों में पाया जाता है, न केवल सिक्किम में बल्कि भूटान, नेपाल में भी इनकी प्रजातियाँ मौजूद रही हैं। किंतु अब इसकी प्रजाति लुप्त प्रायः हो गई है। वन संपदा से बाहुल्य सिक्किम राज्य में इस मृग के विषय में जानना भी जरूरी है। यह कस्तूरी पदार्थ बहुमूल्य है, इससे कई प्रकार की दवाईयाँ बनायी जाती हैं। इसका परफ़्यूम भी बनता है, जिसकी कीमत करोड़ों में है। इससे संबंधित पाठ 'दोहे' कक्षा दसवीं के 'स्पर्श भाग - 2' में संकलित है। वन्य जीवों एवं इसके संरक्षण हेतु ऐसे पाठों को पढ़ना आवश्यक जान पड़ता है।

कंचनजंघा का स्थानीय नाम भी प्रचलित है। लेप्चा भाषा में इसे 'कोंगछैन कोंग ल्हो' (कौंगछेन च्यू) कहा जाता है। भूटिया भाषा में 'खांचे छै जेगा' और लिम्बू भाषा में यह 'फोकतांगलूगंमा' नाम से प्रचलित है। भूटिया साहित्य अनुसार, मान्यता है कि इसकी पाँच श्रेणियों में अलग-अलग वस्तुएँ रखी गई

हैं, एक पहाड़ में नमक (छय) दूसरे में सोना-चाँदी (शअरथांग नी) तीसरे पहाड़ में बहुमूल्य रत्नों की संपत्ति (छौ दै थअंग नौर) चौथे में (जिपी के छैन) हथियार एवं रेशमी वस्त्र एवं इसके पाँचवे पहाड़ में औषधि (डू मैन) इत्यादि संरक्षित है। गुरुरिम्पोछे बुद्ध के अवतार माने जाते हैं, उन्होंने सिक्किम को बेयुल डेमोजोंग (फसलों का बगीचा) की उपमा दी है, कंचनजंघा का खास नाम 'खांचे छै जेंगा' है, यह मूल रूप से तिब्बती भाषा से आया है। इसकी लिपि 'थूमीसामबोटा' है, जो तिब्बत से संबद्ध है। बौद्ध धर्म के अनुयायियों की संख्या यहाँ सबसे अधिक है। बौद्ध धर्म की तीनो शाखाएँ - हीनयान, महायान, वज्रयान यहाँ देखने को मिलती हैं। हीनयान शाखा के अंतर्गत, वे तपस्वी होते हैं जो तपरूपी यान में चलते हैं, स्वयं साधना करते हैं और खुद ही उसका फल पाते हैं, यह संप्रदाय थोड़ा व्यक्तिगत है। महायान में वे तपस्वी आते हैं जो तप रूपी यान से चलकर स्वयं का कल्याण तो करते ही हैं, साथ ही जीव जंतुओं के लिए भी कल्याण की कामना करते हैं। वज्रयान शाखा - ऐसा संप्रदाय है जो तांत्रिक विद्या से जुड़ा है। वैसे कोई भी संप्रदाय हो सबका लक्ष्य एक है - तप करके स्वयं का कल्याण करते हुए 'मोक्ष' या 'निर्वाण' प्राप्त करना। यहाँ बौद्ध विहार (गुम्पाओं) की संख्या 67 है। गौतम बुद्ध का एक प्रवचन है- 'इस संसार में दुख है, दुख का कारण हमारी इच्छाएँ हैं, जब तक हम अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण नहीं पा लेते, तब तक हमें सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती, अनन्त इच्छाएँ ही दुःख का कारण है।' प्रसिद्ध उपन्यासकार, कहानीकार मुंशी प्रेमचंद की कहनी 'आत्माराम' भी इसी बात की ओर इशारा करती है। आत्माराम सुनार के पास एक तोता है, जिससे उसका आत्मीय लगाव है। एक दिन तोता पिंजड़े से निकलकर गाँव के जंगल के एक पेड़ की डाली पर बैठ जाता है। कुबड़ा आत्माराम जो शारीरिक रूप से कमजोर है, किंतु उस तोता के पीछे बड़ी फुर्ती से भागता है। मायारूपी हमारी इच्छाएँ तोताराम के अनुसार नचाती हैं, तोता जहाँ-जहाँ उड़ता, मायारूपी इच्छाएँ भी उसी ओर मुड़ जाती है। गौतम बुद्ध ने मध्यम पथ की जो बात कही है, सचमुच! आज भी प्रासांगिक है - व्यक्ति को जीवन में ज्यादा ऊँचा भी नहीं उठना चाहिए और न ही नीचे गिरना चाहिए। हर परिस्थिति में व्यक्ति को सामान्य बने रहना चाहिए न सुख में ज्यादा इतराये और न दुःख में ज्यादा विचलित हों। हमारा जीवन पथ मध्यम पथ की ओर होना चाहिए।

जिस प्रकार हम अपने शरीर को पोषण देने के लिए संतुलित आहार ग्रहण करते हैं, ठीक उसी तरह मानसिक शक्ति को बढ़ाने के लिए योगासन, ध्यान करना चाहिए। अच्छा साहित्य मानसिक शक्ति को बढ़ाता है। यहाँ पर धर्म अच्छी भूमिका निभाता है, इसलिए कहा गया है कि धर्म से जुड़ना भी आवश्यक है, धर्म से जुड़ने का मतलब अंधविश्वास को बढ़ावा देना नहीं है। धर्म से जुड़ने का अर्थ है अपने विचारों में शुद्धता लाना, अपने संस्कारों में समय-समय पर सुधार लाना। आरोह भाग - २ बारहवीं कक्षा के पाठ्यपुस्तक में संकलित धर्मवीर भारती का निबन्ध - 'काले मेघा पानी दे' द्वारा लेखक ने धर्म और विज्ञान के अंतर्द्वन्द्व को दिखाया है। एक तरफ धर्म दूसरी तरफ तार्किक सोच, लेखक ने बड़ी चतुराई से धर्म के संस्कारों को बचाने की बात भी कही और पानी की निर्मम बर्बादी पर भी प्रश्न उठाया है। एक जगह उन्होंने लिखा कि हम भारतीय अंग्रेजों से पिछड़ गये क्योंकि हम अपने धर्म के अंधविश्वासों को पूरा करने में ही

उलझे रहे। मतलब है कि धर्म का अपना स्थान है, और तार्किकता से जुड़े सवाल और विज्ञान अलग है। बुद्धिमान तो वह है जो इन दोनों में सामंजस्य बिठा सके।

सिक्किम में रहने वाले लोग धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। कंचनजंघा का यहाँ के जीवन में बहुत ज्यादा महत्त्व है न केवल धार्मिक, आर्थिक, आध्यात्मिक बल्कि लोक साहित्य की दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। गुरुरिम्पोछे (बुद्ध अवतार) के अनुयायी इंगम्पा, कागीपा संप्रदाय के कहलाते हैं। दूसरा संप्रदाय गिलोकपा एवं शाक्या दलाई लामा के अनुयायी है। यहाँ ज्यादातर गुरुरिम्पोछे के अनुयायी है। 'इंचे गुम्पा' गान्तोक के सबसे प्राचीन गुम्पाओं में से एक है। यहाँ जो पूजा पद्धति है - उसे 'जाकिम' करना कहते हैं। इसमें दोनों सम्प्रदाय इंगम्पा, कागीपा की पूजा होती है। गुम्पा के आंगन में बने दीप प्रज्ज्वलन एवं धूप सांग (अगरबत्ती समान) जलाने का स्थान कंचनजंघा की ओर मुड़े हुए हैं। धूप (सांग) जलाकर कंचनजंघा को साक्षी और अभिभावक मानकर पूजा की जाती है। इस धूप में तीन तरह के अनाज (जौ, मकई, गेहूँ), सत्तू, घी मिलाया जाता है। इसे आग में जलाकर धुआँ किया जाता है, माना जाता है कि इस धुएँ से मृत आत्मा की भूख शांत होती है। व्यक्ति की मौत होने पर मृत आत्माएँ अपने-अपने कर्म अनुसार स्वर्ग एवं नरक के रास्ते जाते हैं। यमराज उनकी आत्मा को कर्म अनुसार स्वर्ग या नरक भेजते हैं। इस अवधारणा को दिखाने के लिए गुम्पाओं में मुखौटा नृत्य 'शिंगजी' दिखाया जाता है। इस नृत्य को गुम्पाओं में तीन-तीन वर्ष के भीतर दिखाया जाता है। गाँव के सभी लोग इसे देखने जाते हैं। लोक मान्यता के अनुसार व्यक्ति को अपने जीवन में एक बार इसे जरूर देखना चाहिए। देखने से व्यक्ति की मृत्यु होने पर जब उसकी आत्मा यात्रा करती है तो उसके अंदर का डर मिट जाता है। रास्ते में मिलने वाले विभिन्न प्रकार के जानवरों के मुखौटों से उसकी मुलाकात होती है, इसे देखने के बाद ये मुखौटे उसे अनजाने नहीं लगते।

प्राचीन समय में लेप्चा लोग सिक्किम को 'रेन्जोंग' कहते थे और भूटिया लोग इस प्रदेश को 'डेन्जोंग' (धान उपजने वाला स्थान) कहते थे। लिम्बू जाति इस प्रदेश को 'सुखिम' कहती थी। सिक्किम शब्द की उत्पत्ति लिम्बू भाषा से हुई है। प्राचीन सिक्किम एक राज्य न होकर स्वतंत्र देश हुआ करता था, यहाँ नामग्याल शासन था। इस देश के द्वितीय महाराज-तेनसुंग नामग्याल (1670-1700) ने तीन शादियाँ की थी। एक भूटान की राजकुमारी पैंदी ओंगमू थी, दूसरी रानी रेन्जोंगमू थी, तीसरी पत्नी लिम्बूवान राजा सोमोहाँग की पुत्री थांगमा मूकमा थी। पुत्री का विवाह करवाने के बाद उनके रहने के लिए नया घर बनवाने की बात उठी, यहीं से 'नया घर' जिसे 'सु-हीम' शब्द बना फिर 'सुक्खिम' बाद में ब्रिटिश लोगों द्वारा उच्चारित यह शब्द सिक्किम बना। आज यह शब्द सिक्किम राज्य के लिए इस्तेमाल हो रहा है।

उस समय लेप्चाओं में एक प्रसिद्ध पुजारी दम्पत्ति थिकुंग तेक एवं निकुंग नअल थे, उत्तर जिला में स्थित एक गाँव था, जिसे आज कावी कहा जाता है, में रहते थे। दिन भर खेती का काम करते और सुबह शाम प्रकृति की पूजा-आराधना करने में अपना समय बिताया करते थे। दोनों में दैवीय शक्ति होने का

आभास मात्र गाँव, जिले एवं राज्य तक सीमित नहीं न होकर इसकी जानकारी तिब्बत के 'छुम्बी-यातुङ' राजा खेबुम्सा को हो गई। खेबुम्सा का कोई पुत्र नहीं था। पुत्र का वरदान पाने के लिए वह सिक्किम की ओर आया। यहाँ 'काबी' नामक स्थान पर आकर उन्होंने एक खेत में वृद्ध को काम करते हुए देखा, उन्होंने उस वृद्ध से 'थिकुंगतेक' के घर जाने का रास्ता पूछा। उस समय जंगल को जलाकर खेती की जाती थी। वृद्ध ने ऊपर पहाड़ी की ओर इशारा करके रास्ता दिखाया। खेबुम्सा जैसे ही पहाड़ी के ऊपर थेकुंग तेक और निकुल नअल दम्पत्ति के घर पहुँचा. उन्होंने देखा कि ये तो वही वृद्ध व्यक्ति हैं जिन्होंने रास्ता दिखाया था, वृद्ध के चेहरे पर कुछ धूल मिश्रित कोयला लगा हुआ था। वास्तव में वही थिकुंग तेक (लेप्चा पुजारी) था, उन्होंने खेबुम्सा को लम्बा रास्ता दिखाया था, स्वयं छोटा रास्ता पकड़कर घर पहुँचे थे। खेबुम्सा का आदर सत्कार करके उनके आने का कारण पूछा। तब राजा ने अपने जीवन में सुख समृद्धि होने के बावजूद पुत्र न होने का दुख जताया। थिकुंग तेक ने राजा खेबुम्सा की बात को बहुत ध्यान से सुना और कहा- 'ठीक है, मैं तुम्हें पुत्र प्राप्ति का वरदान देता हूँ, भविष्य में तुम्हारा ही पुत्र राजा बनेगा'। फिर कावी लुंगचोक नामक स्थान पर पवित्र पत्थर को गाड़कर, पशु बलि देकर शपथ ली गयी कि आज से भूटिया और लेप्चा जाति सगे भाई की तरह रहेंगे। पूजा का पूरा आयोजन निकुंग नअल ने किया था। पवित्र पत्थर लुंगचोक और कंचनजंघा को अभिभावक के रूप में रखकर भाईचारे की शपथ और संधि की गई। इस स्थान का जो नाम पड़ा वह लेप्चा भाषा का ही शब्द है 'कावी' जिसका अर्थ है - हमारा खून। यह 'कुयू सा वी' का अपभ्रंश रूप है। इस वचन का उल्लंघन होने पर धार्मिक कार्यवाही करने की शर्त रखी गई। आगे चलकर खेबुम्सा के तीन पुत्र हुए (1) क्याहू रप (2) मेपेन रप (3) लोमू रप।

पहले पुत्र से जब पूछा गया कि तुम क्या करोगे? तो उन्होंने जवाब दिया था - मैं बदमाशी करूँगा। दूसरे पुत्र से जब पूछा गया कि तुम क्या करोगे? तब उसने जवाब दिया - मैं राज करूँगा। तीसरे पुत्र से भी जब पूछा गया कि तुम क्या करोगे? तब तीसरे पुत्र ने जवाब दिया था कि मैं खेती का काम करूँगा। सिक्किम में सोलहवीं सदी से नामग्याल वंश की उत्पत्ति हुई वह तीसरे पुत्र लोमू रप से मानी गयी है। नामग्याल शासन (1642 - 1975) 300 वर्ष तक चला था। प्रथम नामग्येल फुग्चोङ नामग्याल थे और अंतिम नामग्याल थे- पालदेन थोण्डुप नामग्याल।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कंचनजंघा का यहाँ के जीवन पर गहरा प्रभाव है। हर त्योहार इस पर्वत की पूजा किए बिना संपन्न नहीं होती।

संदर्भ ग्रंथ :

सिक्किमको इतिहास (नेपाली) – जयधमला
Sacred Summit - Khangchendzonga - Pema Wangchuk & Mita Zulca
Manorama Year Book - 2018 Page 552

(**परिचय** : लेखिका सिक्किम के शिक्षा विभाग में भाषा प्रशाखा, हिंदी समन्वयक पद पर कार्यरत हैं।)